है उसे दोषी नहीं समझा जाता है। परन्तु यदि वह स्वेच्छा से किसी की हत्या करे तो निश्चित रूप से नियम के आधीन दण्डनीय होगा।

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः।।१८।।

ज्ञानम्=ज्ञान; **ज्ञेयम्**=ज्ञान का ध्येय (जानने योग्य); **परिज्ञाता**=जानने वाला; **त्रिविधा**=तीन प्रकार के; **कर्म**=कर्म के; **चोदना**=प्रेरक हैं; **करणम्**=इन्द्रियाँ; **कर्म**=कर्म; **कर्ता**=करने वाला; **इति**=ऐसे; **त्रिविधः**=तीन प्रकार के; **कर्मसंग्रहः**=कर्म के संग्रह हैं।

अनुवाद

ज्ञान, जानने योग्य और जानने वाला, ऐसे ये तीनों कर्म के प्रेरक हैं तथा इन्द्रियाँ, कर्म और कर्ता, ये तीन कर्म के आधार हैं।।१८।।

तात्पर्य

ज्ञान, जानने योग्य और ज्ञाता, ये तीनों नित्यकर्म के प्रेरक हैं। कर्मेन्द्रिय, कर्म और कर्ता, ये तीन कर्म के घटक हैं, अर्थात् इन तीनों के संयोग से ही कोई कर्म बनता है। कर्म से पूर्व कर्म करने की प्रेरणा होती है। वास्तव में कर्म से पहले किया जाने वाला संकल्प कर्म का ही सूक्ष्म रूप है। बाद में वही कार्यरूप में प्रकट होता है। सबसे पहले मन में चिन्तन, संवेदन और संकल्प उठता है। इसी को प्रेरणा (संवेग) कहते हैं। कर्म करने में श्रद्धा का नाम ज्ञान है। प्रेरणा शास्त्र से प्राप्त हो अथवा सद्गुरु से, एक ही बात है। जब प्रेरणा हो और कर्ता भी हो, तब इन्द्रियों की सहायता से वास्तव में कर्म संपादित होता है। मन सब इन्द्रियों का केन्द्र है और जानने योग्य है कर्म का तत्त्व। भगवद्गीता में कर्म की इन सभी अवस्थाओं का वर्णन है। सम्पूर्ण कर्मों के समवाय को 'कर्मसंग्रह' कहते हैं।

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि।।१९।।

ज्ञानम्=ज्ञान; **कर्म**=कर्म; **च**=तथा; **कर्ता**=कर्ता; **च**=भी; **त्रिधा**=तीन-तीन प्रकार के; **एव**=निःसन्देह; **गुणभेदतः**=गुणभेद के अनुसार; **प्रोच्यते**=कहे जाते हैं; **गुणसंख्याने**=गुण-निरूपक शास्त्र में; **यथावत्**=जैसे वे कार्य करते हैं; **शृणु**=सुन; **तानि**=उन सब को; **अपि**=भी।

अनुवाद

प्रकृति के गुणों के अनुसार ज्ञान, कर्म तथा कर्ता के भी तीन-तीन भेद कहे गए हैं; उनको मुझ से सुन।।१९।।

तात्पर्य

चौदहवें अध्याय में प्रकृति के त्रिगुणों का विशद वर्णन है। उस प्रकरण में उल्लेख है कि सत्त्वगुण प्रकाशमय है, रजोगुण रागमय है तथा तमोगुण से आलस्य और